ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

प्रेमचंद के उपन्यासों में मध्यवर्ग: दशा और दिशा

Rachana Choudhary

Hindi Sahitya, PG in 2017 & NET In June 2022, India

सार

प्रेमचन्द ने उस समय की राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक व सामाजिक विषमताओं को गम्भीरता से महसूस किया और अपने साहित्य के माध्यम से जनता के सामने प्रस्तुत किया। उनका ध्यान सदैव समाज में नवीन चेतना लाने की ओर रहा यही कारण है कि उनके साहित्य के पात्र मानवता, प्रेम, दया व राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण दिखाई देते हैं ।

परिचय

प्रेमचंद का नाम देदीप्यमान सूर्य की तरह है। यद्यपि वे अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनके लेख न कार्य के कारण वे आज भी जिंदा प्रतीत होते है। उन्होंने अपने कार्य से समाज को जो एक नई दिशा दी , उसके कारण उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने हिन्दी साहित्य को अपनी रचना के द्वा रा समाज को विभिन्न बुराईयों से सांमतों व पूजींवाद के द्वारा ग्रामीण लोंगो पर किए जाने वाले अत्या चार का आँखो देखा हाल बताया है।

प्रेमचंद जी हिन्दी जगत के महान साहित्यकार कहे जा सकते है। यदयपि उन्होंने अनेक विधाओं जैसे नाटक , उपन्याए कहानी , निबंध पर कार्य किया है। लेकिन उन्होंने अपने उपन्यासों के द्वारा ग्रामीण लोगों की मनोदशा का वर्णन किया है। उन्होंने ग्रामीण जीवन को निकट से देखा है। वे स्वय भी मध्यवर्गी य समाज से सम्बंध रखते थे। यही कारण है कि जब भी हम उनका कोई उपन्यास या कहानी पढ़ते है तो हमें समाज में घटित हो रही सच्चाई का अनुभव प्रतीत होता है।

प्रेमचंद जी का चाहे कोई उपन्यास हो या कहानी , जब भी हम पढ़ते है तो कुछ नया पढ़ने या सुन ने को मिलता हैं इस महान साहित्यकार की जितनी प्रशंसा की जाए वो कम है। उन्हें उपन्यास सम्राट की संज्ञा दी गई है।

डॉ . रामस्वरूप चतुर्वेदी ने ' हिन्दी साहित्य व संवेदना का विकास में लिखा है ' " प्रेमचन्द हिन्दी उपन्यास की व्यस्कता की प्रभावशाली उद्घोषणा है। सामाजिक यथार्थ की जिस समस्या को उनके पूर्ववती उपन्या सकारों ने आदर्श व यथार्थ के खानों में बाटंकर देखा था उसे प्रेमचंद सम्पृक्त व संश्लिष्ट रूप में स मझते है। "1

यदि वर्तमान समय की बात की जाए तो प्रेमचंद के उपन्यास आज भी महत्त्वपूर्ण है। अब जबकि प्रेम चंद के समय और अब के समय में बहुत अन्तर आ चुका है , तब भी उनके उपन्यासों का रूप व र्णहीन नहीं हुआ है। प्रेमचंद जी सदा से भारतीय जनता के हितैषी रहे है। उनका मुख्य उद्देश्य ही ज नता की आवाज को ऊपर उठाना था। उन्होंने अपनी आवाज को अपने लेखन कार्य से समाज के बी च पहुँचाई है। प्रेमचंद जी ने महसूस किया कि भारतीय गरीब किसान दिन - रात खेती करता है लेकिन फिर भी वह भूखा सोता है। उसके बीवी - बच्चे कौड़ी - कौड़ी के लिए मोहताज हो जाते है। पूंजीवाद व सांमती व्यवस्था उनका खून - चूसकर चैन की नींद सोती है। सांमतवाद तरह - तरह से उनका शोषण करती है।[1,2,3]

प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास ' गोदान ' में किसान की बेबसी का बहुत ही दयनीय चित्रण किया है। इ स उपन्यास में प्रेमचंद जी किसान और जमींदार का शोषण ही नहीं दिखाया बल्कि समाज में बदलते आर्थिक ढांचे का सुन्दर वर्णन भी किया है। प्रेमचंद के ' गोदान ' ने भले ही संघर्ष की भावना उत्पन्न न की हो लेकिन इस उपन्यास से किसान की नई एंव जवान पीढ़ी धीरे - धीरे जागृत हो रही है। ' गोदान ' का नायक होरी के पुत्र में हम प्रगतिशील चेतना भली - भांति देख सकते हैं। उपन्यास के आरंभ में ही उसकी विद्रोही - वृति का पता चलता है , जब वह अपने पिता से कहता है -

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

" यह सब मानने की बातें हैं। भगवान सबको बराबर बनाते है। यहां जिसके हाथ लाठी है, वही गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।"2

वर्तमान समय में भी किसान की दशा में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है। आज भी किसान पूंजीवाद का पूरी तरह विरोध नहीं करता। पूंजीवाद व्यवस्था लगातार उनका शोषण करती है जिसके फलस्वरूप उनका जीवन बद्तर बना हुआ है। किसान समाज का एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। यदि किसान मेहनत नहीं करेगा तो हमें खाने का एक दाना तक नहीं मिलेगा। किसान की स्थिति हमारे समाज की आर्थिक स्थिति को मापते है।

इस संदर्भ में डॉ. रामवक्ष अपनी पुस्तक "प्रेमचंद और भारतीय किसान" में लिखते है कि -

"प्रेमचंद और भारतीय - किसान" में लिखते है कि,

"किसान समाज का आधार होता है। समाज का उत्पादक वर्ग किसान है, उसी की उन्नति से देश की उन्नति संभव है। उसकी बदहाली देश की बद्हाली।"3

स्त्री सदा सही उपेक्षित रही है। प्राचीन काल से ही उसे वो दर्जा नहीं मिल रहा जिसकी वो हकदार है। अनेक साहित्यकारों व समाज - सुधारकों ने स्त्री की दशा को सुधारने का कार्य किया। लेकिन जो कार्य प्रेमचंद जी ने किया वैसा करना सब के वश की बात नहीं। प्रेमचंद ने निर्भीक होकर अपने लेखन में स्त्री पर हो रहे अत्याचारों को खुलकर वर्णन किया है। उन्होंने समाज में हो रहे अनमेल विवाह, दहेज - प्रथा पर बहुत कुछ लिखा। उन्होंने अपने लेखन की मदद से स्त्री को मुक्त कराने की सोची। उन्होंने अपने उपन्यास "सेवासदन" में दर्शाया है कि किस प्रकार नारी को परिवार वालों की बातें मानकर बिना पसंद के दूल्हे से शादी करनी पड़ती है उसे सदा एक गुलामी की जिदंगी गुजारनी पड़ती है। इस रचना में प्रेमचंद जी ने विपरीत परिस्थितियों से मजबूर होकर हालात से सौदा करने वाली लड़की की कथा कही है।

"सुमन का जीवन नारी पराधीनता की एक मिशाल है और जब वह ड्योढ़ी से पाँव निकालने की कोशिश करती है तो उसे कुलटा मानकर उसका पति उसे घर से बाहर निकाल देता है। सुमन घर नहीं लौटती बल्कि वैश्या बन जाती है"। 4

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास "गबन" में जालपा की मदद से पति के लिए सर्वस्व त्यागने, तो दूसरी और क्रांतिकारी होना दिखाया है। प्रेमचंद जी का मानना है कि स्त्री सबल चरित्र का उदाहरण है, जो बिना किसी झगड़े से जिदंगी को जद्दोजहद से जुझती है और अपनी सूझ - बूझ से रास्ता अख्तियार करती है। 'गोदान' उपन्यास से 'धनिया' के माध्यम से सशक्त इरादे को निडर और धीरज रखने वाली स्त्री का चित्रण किया है जो विपरीत परिस्थितियों में विरोध व विद्रोह का साहस रखती है। प्रेमचंद जैसे अनमोल साहित्यकार ने ही समाज को दहेज - प्रथा से होने वाले नुकसान के बारे में बताया। "वे अपने पाठकों को बार - बार याद दिलाते रहते है कि दहेज के कारण आज हमारे समाज में स्त्रियों की दुर्दशा हो रही है और उनकी जीवन नरक से भी बद्तर होता जा रहा है।"5

प्रेमचंद जी ने उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो दहेज लेना तो चाहते है, ऊपरी मन से मना करते है।

प्रेमचंद उन लोगों को ज्यादा खतरनाक मानते है जो शादी के वक्त तो यह कहते है -

"आपकी खुशी हो दहेज दें या न दें, मुझे इसकी परवाह नहीं, हाँ बारात में जो लोग जाएं, उनका आदर - सत्कार अच्छी तरह होना चाहिए, जिसमें मेरी और आपकी जगह साईं न हो।"6

इस महान साहित्यकार के योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। उनके हिन्दी लेखन के योगदान से ही स्त्री की दशा कुछ सुधर पाई हैं। लेकिन वर्तमान में अब भी समाज में पुरूष की प्रधानता है। चाहे कोई भी कार्यक्षेत्र हो पुरूष को ही स्त्रियों के मुकाबले ज्यादा [4,5,6] वरीयता दी जाती है। आज सरकार और शिक्षा प्रणाली महिला को समाज की मुख्यधारा में लाने का भरसक प्रयत्न कर रही है परंतु पुरूष मानसिकता को बदलने में सब नाकाम है।

प्रेमचंद जैसे महान लेखक हिंदी - साहित्य की धरोहर है। हिंदी जगत में प्रेमचंद जी का वही स्थान है जो स्थान सूर्य का आकाश में है। इस साहित्यकार ने कथा - साहित्य के निर्माण व विकास में अपना सब कुछ न्योंछावर कर दिया। उनके उपन्यास भारतीयों की

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

आत्मा है। प्रेमचंद जी केवल साहित्यिक प्राणी ने थे बल्कि उनके लेख का विषय सामाजिक विमर्श और तत्कालीन समस्याएँ रहा।

विचार-विमर्श

अधिकांश डाक्टर अपने मरीजों को अनावश्यक रूप से दवा खिला कर दवा कंपनियों को फायदा पहुंचाने का काम करते हैं। बड़े-बड़े नर्सिंग होम में मरीजों को अनावश्यक रूप से वेंटिलेटर पर रखा जाता है। जबकि वास्तविक रूप से मरीज मृतप्राय होता है। प्रेमचंद का लेखन उनके इस कथन के पूर्ण अनुकूल है कि 'साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।

प्रेमचंद को जैसे परकाया प्रवेश में महारत हासिल थी यही कारण है कि उनकी कहानियां दलितों और स्त्रियों के दु:खों को उजागर ही नहीं करतीं, बल्कि उसे मार्मिक भी बना देती हैं। प्रेमचंद का कहानी संसार भारतीय समाज की विसंगतियों पर प्रहार करता है, उसकी जड़ता को तोड़ता है और नयी राह सुझाता है। आज भी हिन्दी कहानी प्रेमचंद का आधार लेती है। हिन्दी कथा जगत प्रेमचंद का हमेशा ऋणी रहेगा। अद्‌भुत रचनाधर्मिता के स्वामी और भावों को बहुआयामी आवृतियों में अभिव्यक्ति करने का शिल्प धारण करने वाले, मानव मन के पारखी और उपन्यास सम्राट की पदवी से सम्मानित मुंशी प्रेमचंद ने उत्तर प्रदेश के लमही गांव में 31 जुलाई 1880 से अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ की। ज्ञात हो कि प्रेमचंद ऐसे कथाकार हैं जिनकी रचनाओं के स्पर्श से कोई भी अछूता नहीं है। नई पुरानी, वर्तमान सभी पीढियों ने उनकी कहानियां पढ़ कर अपनी साहित्यिक समझ विकसित की है। उनकी कहानियों में आर्थिक असमानता मनुष्य के भीतर उपजते ईष्र्या-द्वेष, बेईमानी, झूठ-फरेब, मिथ्या अभियोग, झूठे आरोप, व्याभिचार, वेश्यावृत्ति जैसी कुरीतियों का सिर्फ चित्रण नहीं है बल्कि अधिकांश कहानियां एक गहरी सीख भी देती हैं। प्रेमचंद भारतीय समाज में शोषण का दंश झेलते हर व्यक्ति की पीढ़ा को आत्मसात करके उसे अपनी कहानियों में ढालते हैं। इसलिए वे स्त्रियों व दलितों की पीड़ा को स्वर देते हैं। उनकी कहानियां मनुष्य के स्वभाव की एक-एक परत खोलती चलती है। प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियां लिखी हैं। उनकी कहानियां भारतीय समाज की विसंगतियों को उजागर करती हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों का मूल कथ्य भारतीय ग्रामीण जीवन था। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को जो ऊंचाई प्रदान की, वह बाद के उपन्यासकारों के लिए एक चुनौती बनी रही। [7,8,9]प्रेमचंद के उपन्यास भारत और दुनिया की कई भाषाओं में अनुदित हुए, खासकर उनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास गोदान। आज भी हिंदी साहित्य के सबसे बड़े और पढ़े जाने वाले लेखक मुंशी प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं, खासकर कहानियों व उपन्यासों में भारत के वंचित, शोषित, दलित, पिछड़े और विशेष रूप से देश के गरीब किसानों के जीवन संघर्ष और त्रासदियों को सामने लाया है। उनका उपन्यास 'गोदान' देश के किसानी जीवन और उसके संघर्ष का सबसे मार्मिक और संवेदनशील महाआख्यान है। गोदान का हिंदी साहित्य ही नहीं, विश्व साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें प्रेमचंद की साहित्य संबंधी विचारधारा 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' से 'आलोचनात्मक यथार्थवाद' तक की पूर्णता प्राप्त करती है। एक सामान्य किसान को पूरे उपन्यास का नायक बनाना भारतीय उपन्यास परंपरा की दिशा बदल देने जैसा था। किसान जीवन पर अपने पिछले उपन्यासों 'प्रेमाश्रम' और 'कर्मभूमि' में प्रेमंचद यथार्थ की प्रस्तुति करते-करते उपन्यास के अंत तक आदर्श का दामन थाम लेते हैं। लेकिन गोदान का कारुणिक अंत इस बात का गवाह है कि तब तक प्रेमचंद का खोखले आदर्शवाद से मोहभंग हो चुका था। यह उनकी आखिरी दौर की कहानियों में भी देखा जा सकता है। यह विडंबना ही है कि आजादी के पहले से ही प्रेमचंद जहां, देश के किसानों की व्यथा कथा, उनके जीवन संघर्ष को अपनी रचनाओं में जगह दे रहे थे, वहीं आज किसानों के हालात में सुधार की स्थिति यह है कि वह आत्महत्या को मजबूर है। निश्चित ही आज प्रेमचंद होते तो किसानों की स्थिति देखकर बेहद दु:खी होते। उनका मानना था कि ये सारी बुराइयां महाजनी सभ्यता की देन हैं जहां धन का ऐसा असमान बंटवारा होगा वहां ये बुराइयां तो होंगी ही। महाजनी सभ्यता यह मानती है कि जो दलित हैं, शोषित हैं, जो सदियों से गुलाम रहे हैं वे उसी स्थिति में उसे अपनी नियति मानकर संतुष्ट रहे। प्रेमचंद को जैसे परकाया प्रवेश में महारत हासिल थी यही कारण है कि उनकी कहानियां दलितों और स्त्रियों के दु:खों को उजागर ही नहीं करतीं, बल्कि उसे मार्मिक भी बना देती हैं। वह लिखते हैं कि 'जब पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वो महात्मा बन जाता है और अगर नारी में पुरुष के गुण आ जाये तो वो कुलटा बन जाती है।' गोदान में उद्‌धृत ये पंक्तियां प्रेमचंद का नारी को देखने का संपूर्ण नजरिया प्रस्तुत करती हैं। आज हिन्दुस्तान नारी को सशक्त बनाने के लिये जिस क्रांतिकारी दौर से गुजर रहा है उस नारी को प्रेमचंद बहुत पहले ही सशक्त साबित कर चुके हैं। प्रेमचंद के साहित्य की स्त्री 'कर्मभूमि' में उतरकर पुरुष के कांधे से कांधा मिलाकर देश की आजादी के लिये संघर्ष करती है, उसे 'गबन' कर लाये पैसों से अपने पति की भेंट में मिला चंद्रहार स्वीकृत नहीं है, वो एक गरीब किसान के दुख-दर्द की सहभागी बन अपना पतिव्रता धर्म भी निभाती है, वो 'बड़े घर की बेटी' भी है और उस सारे पुरुष वर्चस्व वाले परिवार में मानो अकेली मानवीय गुणों से संयुक्त है, वो मजबूरियों में पड़े अपने परिवार के लिये समाज के सामंत वर्ग से बिना डरे 'ठाकुर के कुएं' पे जाकर तत्कालिक व्यवस्था को चुनौती देती है और कभी एक मां बनकर अपने बच्चे के लिये खुद की जान भी लुटा देती है। नारी के मातृत्व को प्रेमचंद ने जिस तरह से प्रस्तुत किया है वो कहीं ओर विरले ही देखने को मिलता है। मातृत्व के वर्णन में कई बार उनकी अति भावुकता की झलक हम देख सकते हैं उसकी वजह शायद ये हो सकती है कि प्रेमचंद ने बचपन में ही अपनी मां को खो दिया था और मां के प्यार की कसक ताउम्र उन्हें सालती रही स्त्री के सतीत्व को प्रेमचंद ने भरपूर सम्मान दिया है और उसकी पवित्रता पे प्रश्नचिन्ह उठाने वालों के लिये वो अपने उपन्यास 'प्रतिज्ञा' में लिखते हैं 'स्त्री हारे दर्जे ही दुराचारिणी होती है, अपने सतीत्व से ज्यादा उसे संसार की किसी वस्तु पर गर्व

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

नहीं होता और न ही वो किसी चीज को इतना मूल्यवान समझती है।' ये पंक्तियां आज के उन तमाम बौद्धिक व्यायाम करने वाले तथाकथित आधुनिक लोगों पर तमाचा है जो स्त्री की वासनात्मकता को अनायास ही स्वर देकर उसकी भोग-इच्छा को साबित करना चाहते हैं और उसे सही ठहराकर नारी को सशक्त साबित करने का बेहूदा कृत्य करते हैं।[10,11] एक अन्य जगह प्रेमचंद लिखते हैं 'नारी स्नेह चाहती है, अधिकार और परीक्षा नहीं।' उसकी स्नेह की चाहत को कतई अन्यथा नहीं लेना चाहिये। 'गोदान' में वो लिखते हैं- 'नारी मात्र माता है और इसके उपरान्त वो जो कुछ है वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र। मातृत्व विश्व की सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ी तपस्या, सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान् विजय है।' इस मातृत्व के नैसर्गिक गुणों के कारण ही प्रेमचंद नारी को दया, करुणा और सेवा की महान मूर्ति साबित करते हैं। सेवाभाव की महत्ता का वर्णन करते हुए वो लिखते हैं- 'सेवा ही वह सीमेंट है, जो दम्पत्ति को जीवन पर्यंत प्रेम और साहचर्य में जोड़े रख सकता है, जिस पर बड़े-बड़े आघातों का कोई असर नहीं होता और नारी ही सेवा का पर्याय है।' नारी की उत्कृष्टतम दया का वर्णन करते हुए वे अपनी कथा में लिखते हैं 'बड़े घर की बेटी,' आनन्दी, अपने देवर से अप्रसन्न हुई, क्योंकि वह गंवार उससे कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर खड़ाऊं फेंकता है। जब उसे अनुभव होता है कि उनका परिवार टूट रहा है और उसका देवर परिताप से भरा है, तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है।' प्रेम और नारी छवि के महत्वपूर्ण प्रसंग पर भी प्रेमचंद की दृष्टि गौर करने लायक है। उन्होंने नारी में प्रेम से ज्यादा श्रद्धा को तवज्जो दी, श्रद्धा को ही महान् साबित किया और उनकी नजर में प्रेम, हमेशा दोयम दर्जे का ही रहा। वे लिखते हैं- 'प्रेम सीधी-सादी गऊ नहीं, खूंखार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की दृष्टि भी नहीं पडने देता। श्रद्धा तो अपने को मिटा डालती है और अपने मिट जाने को ही अपना भगवान बना लेती है, प्रेम अधिकार करना चाहता है।' आज के दौर में प्रचलित अय्याशियों का प्रतीक बना वेलेंटाइन डे नुमा प्रेम, प्रेमचंद की दृष्टि में कतई सम्मान का प्रतीक नहीं है। आज के भोगप्रधान विश्व में प्रेम अक्सर हिंसा का रूप अख्तियार कर लेता है। एक असफल प्रेम से पैदा हुई सनक का ही फल है कि लड़कियों को हत्या और तेजाब फेंकने जैसी दुर्दांत घटनाओं का शिकार होना पड़ता है। प्रेमचंद साहित्य में नारी की यौन-शुचिता एवं पवित्रता के अनेक प्रसंग मिलते हैं। यौन-शुचिता का यह प्रश्न नारी के सभी रूपों से जुड़ा है, चाहे वे कुमारी हों, प्रेमिका हों, पत्नी हों, विधवा हों, या कोई और रूप है। नारी जहां-जहां है, वहां-वहां जब नारी के शील-हरण का प्रसंग जन्म लेता है तो प्रतिक्रियाओं के कई रूप होते हैं। प्रेमचंद ने जीवन और कालखंड की सच्चाई को पन्ने पर उतारा है। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि लेखक स्वभाव से प्रगतिशील होता है और जो ऐसा नहीं है वह लेखक नहीं है। प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक हैं। उन्होंने हिन्दी कहानी में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की एक नई परंपरा शुरू की। प्रेमचंद की प्रासांगिकता सर्वकालिक कैसे है, यह यूं सिद्ध होता है कि उन्होंने 1919 में सवाल किया था, 'क्या यह शर्म की बात नहीं है कि जिस देश में नब्बे फीसद आबादी किसानों की हो उस देश में कोई किसान सभा, कोई किसानों की भलाई का आंदोलन, खेती का कोई विद्यालय, किसानों की भलाई का कोई व्यवस्थित प्रयत्न न हो। आपने सैकड़ों स्कूल और कॉलेज बनवाए, यूनिवर्सिटियां खोलीं और अनेक आंदोलन चलाए, मगर किसके लिए?' उनके इस सवाल में 'गरीब' किसान एक ठोस आकार ले लेता है। यह सवाल आज भी कायम है। यही नहीं प्रेमचंद ने 1909 में पिछड़े इलाकों में अपने समय की आरंभिक शिक्षा का जो चित्र खींचा है, वह आज भी थोड़े फर्क से कई जगहों पर दिख सकता है, 'एक पेड़ के नीचे जिसके इधर-उधर कूड़ा-करकट पड़ा हुआ है और शायद वर्षों से झाड़ नहीं दी गई, एक फटे-पुराने टाट पर बीस-पच्चीस लड़के बैठे ऊंघ रहे हैं। सामने एक टूटी हुई कुर्सी और पुरानी मेज है। उस पर जनाब मास्टर साहब बैठे हुए हैं। लड़के झूम-झूम कर पहाड़े रटे जा रहे हैं। शायद किसी के बदन पर साबित कुर्ता न होगा।... हमारी आरंभिक शिक्षा के सुधार और उन्नति के लिए सबसे बड़ी जरूरत योग्य शिक्षकों की है।' आज शिक्षक की योग्यता महत्वपूर्ण नहीं है। वह और कुछ करे, पढ़ाता कम है। सिर्फ इतनी बात नहीं है। प्रेमचंद मध्यवर्ग की तरह-तरह से असलियत खोलते हैं, 'वह झूठे आडंबर और बनावट की जिंदगी का, इस व्यावसायिक और औद्योगिक प्रतियोगिता का इतना प्रेमी हो गया है कि उसकी बुद्धि में सरल जिंदगी का विचार आ ही नहीं सकता।...काश ये यूनीवर्सिटियां न खुली होतीं; काश आज उनकी ईंट से ईंट बज जाती, तो हमारे देश में द्रोहियों की इतनी संख्या न होती।... हमारा तजुर्बा तो यह है कि साक्षर होकर आदमी काइयां, बदनीयत, कानूनी और आलसी हो जाता है।' प्रेमचंद के कई पढ़े-लिखे कथा-चरित्र गरीब और वंचित लोगों के बीच सेवा के लिए सक्रिय होते हैं। वे खुदगर्ज नहीं, सामाजिक हैं। ये प्रेमचंद हैं, जो शिक्षा और चिकित्सा के अलावा सांस्कृतिक सुधार पर जोर देते हैं। वे मानसिकता बदलने के लिए कहते हैं। वे कट्टरवाद का विरोध करते हुए बड़े दुख से कहते हैं, 'अछूत, दलित, हिंदू, ईसाई, सिख, जमींदार, व्यापारी, किसान, स्त्री और न जाने कितने विशेषाधिकारों के लिए स्थान दिया जाएगा। राष्ट्र का अंत हो गया।... मुसलमान जिधर फायदा देखेंगे उधर जाएंगे। सभी दल अपनी-अपनी रक्षा करेंगे। राष्ट्र की रक्षा कौन करेगा?' मुंशी प्रेमचंद की डाक्टरों की निष्ठुरता के सम्बन्ध में लिखी मन्त्र कहानी का कथानक आज भी प्रासांगिक है। वह निर्धन, वृद्ध पिता के मन के अहसास को शब्दाकार देते हुये कहते हैं कि 'सभ्य समाज इतना निर्मम, इतना कठोर होगा, इसकी अनुभूति उस पहले बार होती है।' वह बीज जो मन्त्र कहानी में था वह विशाल बरगद हो गया है। अधिकांश डाक्टर अपने मरीजों को अनावश्यक रूप से दवा खिला कर दवा कंपनियों को फायदा पहुंचाने का काम करते हैं। बड़े-बड़े नर्सिंग होम में मरीजों को अनावश्यक रूप से वेंटिलेटर पर रखा जाता है। जबकि वास्तविक रूप से मरीज मृतप्राय होता है। प्रेमचंद का लेखन उनके इस कथन के पूर्ण अनुकूल है कि साहित्यकार देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है। प्रेमचंद का कहानी संसार भारतीय समाज की विसंगतियों पर प्रहार करता है, उसकी जड़ता को तोड़ता है और नई राह सुझाता है। आज भी हिन्दी कहानी प्रेमचंद का आधार लेती है। हिन्दी कथा जगत प्रेमचंद का हमेशा ऋणी रहेगा।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

परिणाम

प्रेमचंद ने 1936 में अपने लेख 'महाजनी सभ्यता' में लिखा था कि 'मानव समाज दो भागों में बंट गया है। बड़ा हिस्सा उन लोगों का है जो मर जाते हैं और थक जाते हैं, और एक बहुत छोटा हिस्सा उन लोगों का है जो अपनी शक्ति और प्रभाव से बड़े समुदाय की बस में लाए गए हैं। उन्हें इस बड़े हिस्से से कोई सहानुभूति नहीं, रत्ती भर भी रियायत नहीं. उसका अस्तित्व सिर्फ इसलिए है कि वह अपने मालिकों के लिए पसीना बहाए, खून बहाए और चुपचाप इस दुनिया से चला जाए।' इस उद्धरण से यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के मूल सामाजिक सरोकार क्या थे। वे इस बात को अच्छी तरह से समझते थे कि समाज की दुर्दशा के लिए एक बड़ा वर्ग यानि कि बहुजन जिम्मेदार है, जिन लोगों ने उन पर शासन किया, जिन्होंने उनका शोषण किया, उनमें केवल कुछ पूंजीपति, जमींदार, व्यापारी ही नहीं बल्कि ऊंची जाति के निचली जाति (नौकर नौकर) भी शामिल थे। ब्रिटिश सरकार में -मध्यम वर्ग भी उतना ही दोषी था। किसान, मजदूर, दलित वर्ग न केवल उत्पीड़ित एवं दुखी थे बल्कि पूर्णतया असहाय एवं नियति के गुलाम होकर जीवन यापन कर रहे थे। दोनों वर्गों की इतनी स्पष्ट पहचान प्रेमचंद से पहले हिंदी साहित्य में किसी ने नहीं की थी। एक ओर साम्राज्यवादी ब्रिटिश बेड़ियाँ थीं तो दूसरी ओर सामंती शोषण की पराकाष्ठा थी। एक तरफ देश को अंग्रेजों के शासन से मुक्त कराने का आंदोलन चल रहा था तो दूसरी तरफ जमींदारों और पूंजीपतियों के खिलाफ कोई भी विरोध मुखर रूप नहीं ले रहा था। अधिकांश मध्यम वर्ग अंग्रेजी शासन का समर्थक था क्योंकि उन्हें लगता था कि मिथ्या अहंकार प्रदर्शित करने से सुख-सुविधाएँ, कुछ अधिकार और आत्म-गौरव मिलता है।

प्रेमचंद ने वर्ष 1921 में अपने एक लेख (असहयोग आंदोलन और गांधीजी के प्रभाव में) 'स्वराज की पोषक एवं विरोधी व्यवस्था' के अंतर्गत लिखा था कि 'शिक्षित समुदाय सदैव सरकार पर निर्भर रहता है। वह सरकार के कार्यों का संपादन करता है, इसलिए उसकी रुचि इस बात में है कि सरकार मजबूत रहे और वह स्वयं सरकार की मनमानी (उत्पीड़न, निरंकुशता और अराजकता) में भाग लेता रहे। इतिहास में ऐसी घटनाओं की कमी नहीं है जब शिक्षित वर्ग ने अपने स्वार्थों के लिए देश और राष्ट्र का बलिदान दे दिया हो। यह समाज विभीषणों एवं देव सेवकों से भरा पड़ा है। हर जाति का उद्धार सदैव किसानों या मजदूरों ने ही किया है। यह निष्कर्ष आज भी पूर्णतः प्रासंगिक है। उन्होंने 1919 ई. में 'ज़माना' में लिखा। मैंने एक लेख लिखा था जिसमें कहा गया था कि इस देश में 90 प्रतिशत किसान हैं और यहां कोई किसान सभा नहीं है। 1925 ई मई में किसान सभा हुई।[9,10,11]

आमतौर पर माना जाता है कि किसी भी आंदोलन, क्रांति और विद्रोह में मध्यम वर्ग की अहम भूमिका होती है. मध्यम वर्ग का एक हिस्सा सरकार की वकालत करता है और दूसरा हिस्सा आंदोलनों की आवश्यकता की वकालत करता है। यह दूसरा हिस्सा वैचारिक परिस्थितियों के निर्माण में तो अपनी भूमिका निभाता है, लेकिन आंदोलन शुरू करने की जिम्मेदारी से हमेशा बचता है। आंदोलन उग्र और सर्वव्यापी होने पर भी वह उसमें सक्रिय भूमिका निभाता है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रेमचंद न केवल इस वर्ग की उदासीनता से व्यथित थे, बल्कि समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, व्यापक, सामंती शोषण, वर्ग एवं जातिगत भेदभाव के प्रति इस वर्ग की उदासीनता एवं तटस्थता से भी दुखी थे प्रेमचंद का जन्म उत्तर-औपनिवेशिक भारत की पृष्ठभूमि में हुआ था जहाँ उन्हें और उनके परिवार को गंभीर आर्थिक परिस्थितियों से गुज़रना पड़ा था। साथ ही धार्मिक और सामाजिक रूढ़िवादिता ने लोगों को विचारहीन बना दिया (यहाँ विचारहीनता का अर्थ शोषण और असमानता की स्थितियों का विरोध न करना है)। असहायता, यथास्थिति और असमानता की व्यापकता की प्रतिक्रिया के रूप में, प्रेमचंद के विचारशील स्वभाव ने उन्हें इस व्यवस्था के विरोध के लिए प्रेरित किया।

उस समय भारतीय परिवेश में समाज में पाखंड, अहंकार, पाखंड, अंधविश्वास, दहेज, नारी उत्पीड़न, सूदखोरी, सूदखोरी, भिक्षावृत्ति, छुआछूत, धार्मिक अत्याचार, सामंती उत्पीड़न तथा पूंजी के प्रभाव का विस्तार व्याप्त था। ये बीमारियाँ मनुष्य की मानवता को लील रही थीं। प्रेमचंद ने इस अभिशप्त समाज और मनुष्य के अंतर्ज्ञान को बड़ी सहानुभूति और संवेदनशीलता के साथ देखा और परखा था जिसके कारण उनके लेखन में जातिगत समाज की स्पष्ट तस्वीर उभर कर सामने आई। वे गरीबों, दलितों और शोषितों के पक्षधर लेखक बने। उन्होंने लिखने के बारे में सोचा था कि 'साहित्य में राजनीति के सामने मशाल दिखाने की सत्य की शक्ति है।' प्रेमचंद का पूरा जीवन इसी संघर्ष में बीता, जिसमें वे लेखन को अपने आप में प्राथमिक एवं संपूर्ण कृति का दर्जा दिलाने के लिए संघर्ष करते रहे। हम अभी भी यह नहीं समझ पाए हैं कि लेखन एक सामाजिक रूप से उत्पादक गतिविधि है। लिखने से पहले पूरी तैयारी जरूरी है.

'किसानों की बदहाल जिंदगी बदलने से ही बदलेगी देश की शक्ल' उनका अनुमान है कि अंग्रेजों की राय में गरीबों, मजदूरों और किसानों की हालत जितनी खराब है और बदतर होती जा रही है, किसी भी हिस्से की नहीं उनके लिए समाज, राष्ट्रीयता या आत्मनिर्णय विशाल किसान जागृति का सपना है, जिससे भेदभाव और शोषण से मुक्त समाज बनेगा।' उनके शब्दों में- जिस राष्ट्रीयता का हम सपना देख रहे हैं उसमें रंगों की गंध तक नहीं होगी। वह हमारे श्रमिकों और किसानों का साम्राज्य होगा। प्रेमचंद

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि भारत में सबसे बुरी हालत किसानों और मजदूरों की है। एक तरफ जमींदारों का शोषण है, दूसरी तरफ पूंजीपति, उद्योगपति और बीच में सूदखोर हैं। लेकिन अगर उन्होंने यहां तक अपनी समझ विकसित कर ली होती तो शायद भारतीय समाज के चित्र के रूप में उनकी समझ और दृष्टि अधूरी रह जाती। उन्होंने भारतीय जनजीवन में सदियों से चली आ रही अमानवीय जाति व्यवस्था पर भी पूरा ध्यान दिया। इसलिए, उनकी कई कहानियाँ जाति व्यवस्था की अमानवीय कार्यप्रणाली को स्पष्ट रूप से उजागर करती हैं। ठाकुर का कुआँ, सद्गति, सवा सेर घी, गुल्ली डंडा, कफ़न उनकी प्रतिनिधि कहानियाँ हैं जो इस सामाजिक विसंगति को ईमानदारी से उजागर करती हैं। 'ठाकुर का कुआँ' में जोखू चमार के दूल्हे की गर्मी दूर करता है। वहीं चमार टोले में एक जानवर कुएं में गिरकर मर गया है. उस कुएं का पानी पीना किसी भी तरह से सुरक्षित नहीं है, इसलिए पीने के लिए साफ पानी की जरूरत है। अब साफ पानी तो ठाकुर के कुएँ से ही मिल सकता है, चमार वहाँ नहीं जा सकते। वर्णधर्म के अनुसार वे अछूत थे तथा उनकी छाया भी अपवित्र मानी जाती थी। इसलिए जोखू की पत्नी को रात के अंधेरे में छिपकर पानी लाने का साहस करना पड़ा। लेकिन ठाकुर की आवाज से ही वह डर जाती है और वह अपने बर्तन कुएं में छोड़कर भाग जाती है। घर लौटकर देखती है कि जोखू वही गन्दा पानी पी रहा है। एक तरफ घोर अमानवीयता है तो दूसरी तरफ त्रासदी और बेबसी है. ऐसा जोखिम गरीब होने के कारण नहीं बल्कि अछूत होने के कारण है क्योंकि किसी भी गरीब उच्च जाति को उस ठाकुर के कुएं से पानी पीने से वंचित नहीं किया जा सकता था और चाहे उसके साथ कितना भी अत्याचार या शोषण क्यों न किया जा रहा हो।

'सद्गति' कहानी में वह चमार जाति का है, लेकिन अपनी बेटी की शादी के शुभ अवसर पर उसे छुड़ाने के लिए पंडित के पास पहुंचता है। भूखे पेट होने के बावजूद वह पंडित के कहे अनुसार मेहनत करता है और अंत में लकड़ी काटते-काटते मर जाता है। उनके शव के साथ पंडित परिवार का व्यवहार अत्यंत क्रूर है। वह उसे खींचकर ले जाता है। 'सवा सेर घी' में पंडित एक सूदखोर है. शंकर अपने जीवनकाल में उस पंडित का ब्याज नहीं चुका सका। 'कफन' के घीसू और माधव भी दलित हैं और व्यवस्था का दुष्चक्र उन्हें उस मुकाम तक ले आया है, वह भी अमानवीय है। 'गली डंडा' का गया भी अपनी स्थिति से बाहर नहीं निकल पा रहा है. 'गोदान' के होरी, महतो है और राय साहब पंडित दातादीन और महाजन के शोषण के शिकार हैं। होरी की मृत्यु के बाद पंडित दातादीन गोदान के बहाने होरी की पत्नी धनिया की जमा पूंजी हड़प लेता है। यहां हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि एक ओर प्रेमचंद की कहानियों में 'पूस की रात', 'पंच परमेश्वर', 'बड़े भाई साहब', 'नमक का दरोगा' और 'निर्मला', प्रेमाश्रम', 'कायाकल्प' जैसी अनूठी कहानियां हैं। और 'गबन' सामाजिक कुरीतियों और नारी शोषण पर आधारित उपन्यास हैं, जबकि गोदान में उनकी चारित्रिक चेतना और वर्ग चेतना का विस्तार है। गबन उपन्यास का अविस्मरणीय पात्र देवीदीन खटीक, जिसके दो बेटे स्वाधीनता आंदोलन में शहीद हुए थे, शासक वर्ग और उसके शासक वर्ग पर गहरा संदेह करता है- 'अरे, तुम देश को बचा लोगे।' पहले खुद को बचाएं, गरीबों को लूटकर उनका घर भरना आपका काम है... सच बताइए, फिर आप सूरज का नाम लेते हैं, उसका कौन सा रूप आपकी आंखों के सामने आता है? तुम्हें भी मोटी तनख्वाह मिलेगी, तुम भी अंग्रेजों की तरह बंगलों में रहोगे, पहाड़ों की हवा खाओगे, अंग्रेजी अंदाज में घूमोगे। इस देश का क्या कल्याण होगा? आप और आपके भाई-बहन भले ही आराम और शान से रहें, लेकिन देश में कुछ भी अच्छा नहीं होगा... आप दिन में पांच बार खाना चाहते हैं और वह भी अच्छे भोजन के साथ। बेचारे किसान को एक महीने तक सूखी च्युइंग गम भी नहीं मिलती. उसका खून चूसोगे तो सरकार तुम्हें पद देगी. क्या आपका ध्यान कभी उनकी तरफ जाता है? अब तुम्हारे पास राज्य नहीं है, तो तुम सुख-विलास पर इतना मरते हो, जब राज्य हो जायेगा, तब गरीबों को पीसकर पी जाओगे।'[10]

19वीं सदी के आखिरी दशक से लेकर 20वीं सदी के तीसरे दशक तक प्रेमचंद ने भारत में व्याप्त सभी सामाजिक समस्याओं पर लिखा। चाहे किसानों-मजदूरों और जमींदारों की समस्या हो, चाहे अस्पृश्यता या नारी मुक्ति का प्रश्न हो, चाहे नमक दवा के माध्यम से समाज में फैले इंस्पेक्टर-राज का जिक्र हो, कोई भी अध्याय उनकी नजर से बच नहीं सका। प्रेमचंद ने हिंदी कथा साहित्य को एक नया मोड़ दिया, जहां पहले साहित्य स्वप्न लोक की यात्रा कर रहा था और विलासिता मायावी भ्रमों में पड़ी हुई थी, ऐसे में प्रेमचंद ने कथा साहित्य में जनता की पीड़ा को उठाया। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भले ही प्रेमचंद का जन्म दलित जाति में नहीं हुआ था, लेकिन यह निश्चित है कि वे दलितों के प्रति ईमानदार, सहानुभूतिपूर्ण और सम्मानजनक थे, उनके साथ होने वाले अन्याय और उनकी मानवीय सामाजिक-आर्थिक स्थिति के समर्थक थे अधिकारों का. प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. बिपिन चंद्रा ने एक बार टिप्पणी की थी - 'यदि बीसवीं शताब्दी में स्वतंत्रता-पूर्व किसानों की स्थिति के बारे में इतिहास लिखा जाएगा, तो प्रेमचंद का 'गोदान' इतिहासकार का प्राथमिक स्रोत होगा, क्योंकि इतिहास अपने समय के साहित्य से कभी ओझल नहीं होता है। । करता है।' गोदान न केवल किसानों के संघर्ष की कहानी है, बल्कि यह महिलाओं की बहुमुखी स्थिति का भी चित्रण करती है। गोदान में गोबर और झुनिया के अवैध प्रेम और विवाह को व्यक्त किया गया है, सिलिया चमाइन और मातादीन पंडित का प्रेम-प्रसंग जहाँ वे परंपरा को तोड़ते हैं और स्त्री को मुक्त करते हैं, वहीं मालती जो मेहता से प्यार करती है, एक सामाजिक कार्यकर्ता है जो झुग्गियों में मुफ्त दवा वितरित करती है क्लब का दिखावा है-संस्कृति के बहाने वह जीवन का द्वंद्व भी जीती है।

जिस काल में प्रेमचंद ने सक्रिय रूप से लिखना शुरू किया वह छायावाद का काल था। उस समय निराला, पंत, प्रसाद और

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

महादेवी जैसे संगीतकार अपने चरम पर थे, लेकिन प्रेमचंद ने अपने तत्कालीन समाज में व्याप्त छुआछूत, सांप्रदायिकता, हिंदू-मुस्लिम एकता, दलितों के प्रति सामाजिक सद्भाव को जोड़ा। एक लेखक से भी आगे उनकी चिंताएं थीं और यह बात उनकी रचनाओं में व्यक्त हुई है। उनकी कहानियों और उपन्यासों के पात्र सामाजिक व्यवस्था से संघर्ष करते हैं और अपनी नियति के साथ-साथ भविष्य भी बनाते हैं। भले ही उन्हें नियति में यातनाएं, गरीबी और निराशा मिले, लेकिन अंततः वे हार नहीं मानते और संघर्षों के बीच ही भविष्य की नींव रखते हैं। अपने व्यक्तिगत जीवन के संघर्षों से प्रेमचंद यह जानते थे कि संघर्ष की राह बहुत पथरीली है और इसे केवल भावनाओं और हृदय परिवर्तन से पार नहीं किया जा सकता। यही कारण था कि प्रेमचंद ऊपर से जितने के लिये व्याकुल थे, भीतर से उतने ही व्याकुल थे। दरअसल, प्रेमचंद ने एक ऐसे राष्ट्र-राज्य की कल्पना की थी जिसमें किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव न हो - न जाति, न वर्ण, न रंग और न ही धर्म। प्रेमचंद का सपना एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना था जहां सभी प्रकार की असमानता, सामाजिक बुराइयों और सांप्रदायिक दुश्मनी से परे समानता सर्वोपरि हो। प्रेमचंद इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि भारतीय समाज में व्याप्त अलगाव ही उपनिवेशवाद की जड़ है। अंग्रेजों ने अलगाव और विविधता की इस खाई को और गहरा करने की कोशिश की और भारत के सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मोर्चों पर नुकसान पहुँचाया। यही कारण है कि 1933 में जब संयुक्त प्रान्त के गवर्नर मैल्कम हेली ने कहा था कि - 'जहाँ तक हम भारत के रुख को जानते हैं, यह कहना तर्कसंगत है कि आज से 50 वर्ष बाद भी वह ऐसा नहीं कर सकेगी। अपने लिए ऐसी व्यवस्था बनाना जो स्पष्ट रूप से बहुमत के लिए जिम्मेदार हो।'

निष्कर्ष

प्रेमचंद ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई और लिखा कि- 'जिनका पूरा जीवन भारत की राष्ट्रीय आकांक्षाओं को दबाने में बीता है, उनका यह कथन उचित नहीं लगता।' प्रेमचंद के बाद जिन लोगों ने साहित्य को सामाजिक सरोकारों और प्रगतिशील मूल्यों के साथ आगे बढ़ाने का काम किया, वे प्रेमचंद की विरासत और परंपरा के साथ काम कर रहे थे। प्रेमचंद की रचनाओं ने यशपाल से मुक्तिबोध तक सहित बाद की सभी पीढ़ियों को दिशा प्रदान की।[11]

संदर्भ

1. "कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया था मुंशी प्रेमचंद". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-07-31.
2. ↑ "रचना दृष्टि की प्रासंगिकता -मन्नू भंडारी" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 7 अगस्त 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
3. ↑ "'हिंदी के पहले प्रगतिशील लेखक थे प्रेमचंद'" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 27 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
4. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 13. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
5. ↑ "'स्वस्थ साहित्य किसी की नक़ल नहीं करता'" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 28 सितंबर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
6. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 185. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
7. ↑ "Oka Oori Katha" (अंग्रेज़ी में). मृणालसेन.ऑर्ग. मूल से 6 जनवरी 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जुलाई 2008.
8. ↑ "हिंदी दिवस: हिंदी का यह लायक बेटा कभी निराश होकर फ़िल्म इंडस्ट्री छोड़ लौट गया था". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-08-01.
9. ↑ "PREM CHAND WRITER" (पीएचपी) (अंग्रेज़ी में). इंडियन पोस्ट. मूल से 6 अप्रैल 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 जून 2008.
10. ↑ "लमही में शोध संस्थान बनेगा" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 27 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 जून 2008.
11. ↑ प्रेमचंद मुंशी कैसे बने- डॉ॰ जगदीश व्योम, सिटीजन पावर, मासिक हिन्दी समाचार पत्रिका, दिसम्बर २०११, पृष्ठ संख्या-०९

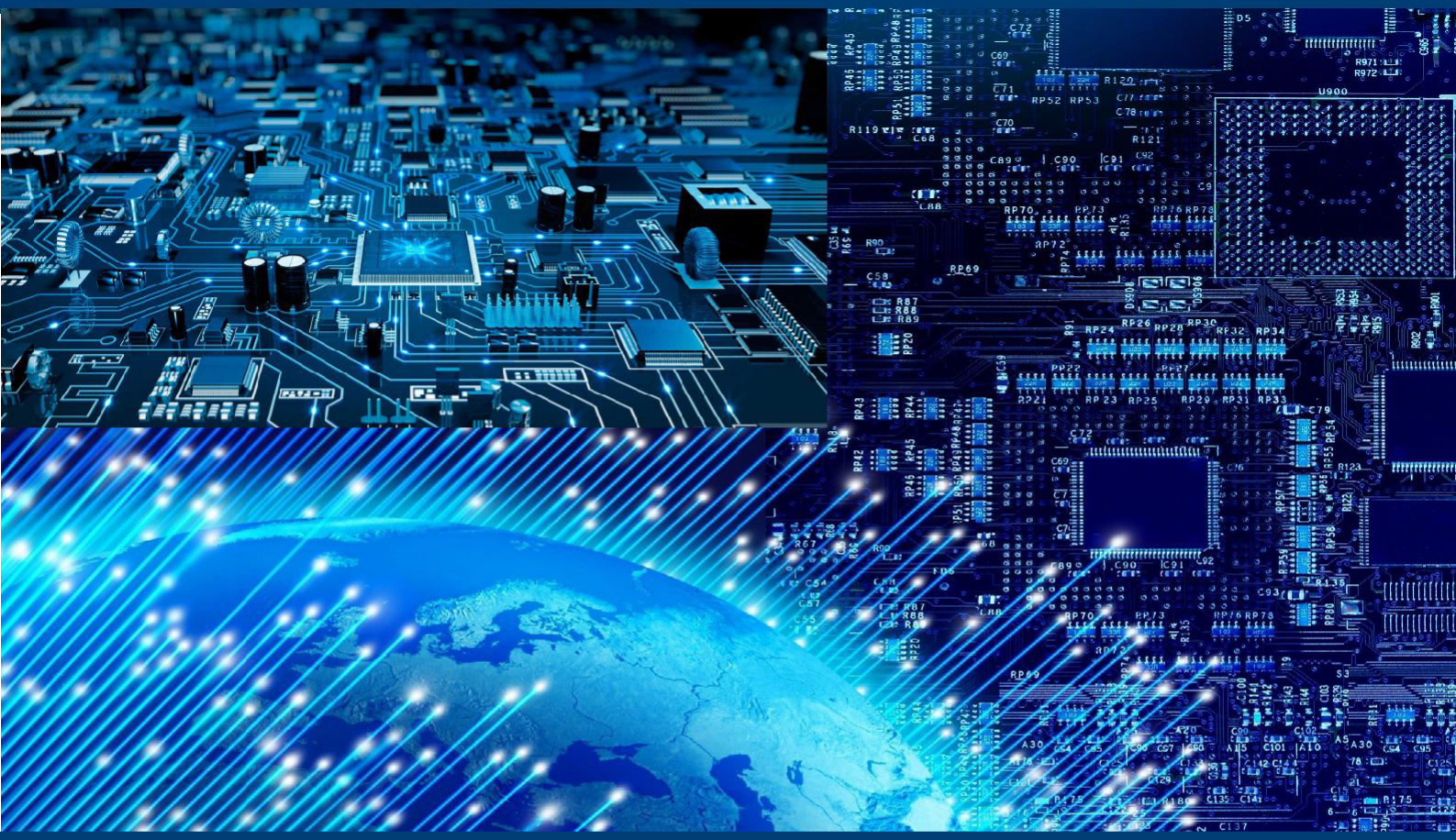

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |